प्रथम अध्याय

यशपाल का व्यक्तित्व और कृतित्व ।

प्रथम अध्याय

यशपाल का व्यक्तित्व और कृतित्व --

किसी भी महान साहित्यकार के कार्य और कृतित्व पर उसके व्यक्तिगत जीवन, उसके अपने निजी अनुभवोंकी गहरी छाप पडती है। आख्यायिका है कि, संसार में कुछ लोग समृध्द और श्रेष्ठत्व के साथ जनम लेते हैं तो कुछ लोग अपने कर्तृत्व, परिश्रम, बौध्दिकता के आधारपर समाज से, संसार से बहुत कुछ हासिल कर लेते हैं। यशपाल की गिनती उन्हीं गिने-चुने महत्वाकांक्षी लोगों के साथ की जा सकती है, जो अपने बलबुतेपर संसार से बहुत कुछ प्राप्त कर लेते हैं, और संसार में अपने कृतित्व से सदाही अमर रहते हैं। यशपाल के सभी उपन्यासोंको पढकर यह महसूस होता है की, चाहे कलम का माध्यम हो या तलवार का हो, यशपाल का जीवन ही क्रांति के लिए हुआ था। उन्होंने अनेक बिकट परिस्थितियों से गुजरकर अपने दिलमें समायी हुओ हर भावना को बडे संघर्ष और साहस से साहित्य क्षेत्रमें साहित्य के रूप में व्यक्त किया है। उनकी गणना किसके साथ नहीं की जाती ? " यशपाल जैसे नवरत्न के पहलुओं को गिनना ही दुश्वार। वे कौन नहीं थे ?" वे तो कुशल साहित्यकार, पत्रकार, चित्रकार, अदाकार और क्रांतिकारी.... थे। " जन्म से लेकर मृत्यू तक उनका जीवनवृत्त किसी नदीके उद्‌गम से लेकर समुद्र के मिलन तक का लम्बा वृतांत है।"[१]

---

१ डॉ. सुनीलकुमार लवटे - यशपाल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व - पृ.११।

पारिवारिक पृष्ठभूमि --

हिन्दी साहित्य के विश्वविख्यात क्रांतिकारी साहित्यिक ,आदर्शवादी और यथार्थवादी यशपाल का जन्म ३ दिसम्बर,१९०३ में फिरोजपुर छावनी में खत्री परिवार में हुआ । आपकी माता श्रीमती ' प्रेमादेवी ' फिरोजपुर के प्रसिध्द अनाथालय में अध्यापिका का काम करती थी । यशपाल के पूर्वज ' कांगडा ' जिला के निवासी थे । उनके पिता ' हिरालालजी ' हिमाचल में हमीरपुर के भूप्पल गांव में रहते थे । उनकी आर्थिक परिस्थिति कुछ अच्छी नहीं थी । एक कच्चे मकान और दुकान के सिवा अन्य कोई संपत्ती उनके पास नहीं थी । बडीही दुरावस्था में वे अपनी पत्नी ' प्रेमादेवी ' के साथ दिन गुजारते थे । वक्त गुजारना बडाही मुश्किल था ।

अपना इस जमीन और जायदाद के बारेमें स्वयम् यशपाल की व्यंग्योक्ति देखिए ," हजार डेढ हजार वर्ग गज जमीन का टुकडा और कच्चा मकान जो कुछ था, उसके लिए कांगडे जाकर बसना ना मेरी माँ को पसंद था ना मुझे ।" [१]

इस कथन से यशपाल के निजी हालत की बहुत ही करीब से जानकारी होती है ।

गुरुकुल जीवन शिक्षा --

यशपाल की माता बडीही सुविध और सरल स्वभाव की थी । अत: बेटे की पढाई का उन्होंने बचपन से ख्याल रखा । परिवार की पारंपारिक धारणा के अनुसार उनकी माताजी आर्य समाज के आदर्शोंसे ज्यादा आकर्षित थी । उनके माताजी की यह दिली ख्वाहिश थी की वे ब्रह्मचारी प्रचारक और प्रसारक बने ।

---

१ यशपाल - सिंहावलोकन - प्रथम भाग - पृ.६१ ।

उन्हें यह चिंता हमेशा सताती रहती थी की, घर की आर्थिक विपन्नता से बेटा अनाडी ना रहे। इसी में उनकी माताजी के आदर्श और सुसंस्कृत गुणोंका पता चलता है। वह यशपाल को कांगडी के गुरुकुल में भेजती है। उन्हें वहाँ कोई रूचि नहीं थी। जैसे तैसे कांगडा में उन्होंने सातवी पास कर ली।

माताजी के संस्कार --

पति की मृत्यू के पश्चात यशपाल और उनके छोटे भाई धर्मपाल इन दो बेटोंका भार माँ ने अपने कंधोंपर ले लिया, और मन में बेटों को उच्च शिक्षा और आदर्शवादी बनाने की ठान ली और उसके बाद उनकी माँ कांगडा त्याग कर स्थायी रूप से पंजाब में रहने लगी। अपने पुत्र को उच्च शिक्षित करने के लिए वे वैतानिक कार्य करने लगी। उन्होंने अध्यापिका का काम किया। अपनी माताके बारे में यशपाल की याद कृतज्ञता निम्नलिखित शब्दों में अभिव्यक्त होती है --

" हम दोनों को सफल और आदर्श बनाने के लिए पहाडी इलाका छोडकर पंजाब के लू से तपनेवाले मैदानोंमें ' आर्य कन्या पाठशाला ' में नौकरी करके निर्वाह कर रही थी। इस काम से उनका वेतन कुल ३०-००रूपये था।"[१] उनकी माताजी ने उन्हें इस काबिल बनाया की दुनियामें एक काबिल इंसान बन सके। अपनी गरीब परिस्थितियों में भी यशपाल ने अपने जमीर और जज्बात याने अपने स्वाभिमान और इज्जत को कभी नीलाम ना होने दिया। पढाई के साथ-साथ घर के काम में भी अपने माताजी को हमेशा मदद करते थे। उनके माताजी का देहांत १५ अगस्त, १९६४ को हुआ। जीवन के अंतिम क्षण तक वे अपने कार्य में तन्मय रही।

डी.ए.वी.स्कूल लाहौर --

गुरूकुल कांगडी के पश्चात वे लाहौर के डी.ए.वी.स्कूल में भरती हुओ। वहाँ

---

१ यशपाल - सिंहावलोकन भाग-१ - पृ.४४।

भी आर्य समाज के प्रभाव के कारण शिक्षा हिन्दी माध्यम में ही दी जाती थी, परंतु उसके साथ ही लाहौर में उर्दू सिखना अनिवार्य था । उन्होंने अपनी मेहनत और लगन से इ.स.१९२१ को मॅट्रिक परीक्षा में जिला में अव्वल दर्जा हासिल कर अपनी मेधावी बुध्दि का परिचय दिया ।

यशपाल की पहली कमाई --

भजन,कीर्तन,उपदेश,प्रचार भाषण आदि कार्यों के साथ समाज की ओर से चलायी जानेवाली पाठशाला में अछूत बच्चोंको पढाने के लिए प्रधान प्राध्यापक नियुक्त किए गए । उनका मासिक वेतन ८।- रूपये निश्चित हुआ । यशपाल के जीवन क्रम में यही उनकी पहली कमाई थी ।

मॅट्रिक की परीक्षा के साथ-साथ ही उन्होंने राजनैतिक पढाई भी शुरु की । आंदोलन के प्रचार कार्यों के लिए देहातों में जाने लगे और कॉंग्रेस के हर कार्य में सहयोग देते रहे । मॅट्रिक की परीक्षा में विशेष प्राविण्य पाने पर भी यशपाल उस समय के असहयोग आंदोलन के कारण कालिज नहीं गये । माँ ने उन्हें बहुत समझाया । माँ की जिद के सामने एक बातपर, एक शर्त पर कालिज जाने के लिए स्वीकृती दे दी कि, वे किसी सरकारी कालिज में दाखिल नहीं होंगे । १९२२ में कालिज खुलने पर वे नॅशनल कालिज में दाखिल हुए । नॅशनल कालिज की शिक्षा व्यवसायिक और व्यवहारिक दोनों रूपसे लाभदायी ना थी । यहीं यशपालजी की भेट मशहूर क्रान्तिकारी भगतसिंह तथा सुखदेव जैसे क्रांतिकारियोंसे हो गयी । अध्यापकों की प्रेरणा तथा अन्य लेखकों के ग्रंथोमें प्रस्तुत विचारों ने उन्हें गांधीजीके विचारोंसे, ज्यादा प्रभावित किया । १९२५ में यशपालजी ने नॅशनल कालिज से बी.अे.और पंजाब युनिवर्सिटीसे ` प्रभाकर ` की परीक्षा पास की । समकालीन साहित्यकारों में यशपालजी की शिक्षा उच्च स्तरीय मानी जा सकती है ।

आंतकवादी जीवन के कठोर और कटू अनुभवोंके पश्चात ही यशपाल के जीवन में एक व्यवस्था आ सकी । सादे लिवास में रहना, लैन्च न खाना, प्रतिदिन शेव करना और साहित्य की सृजना करना यही उनका सुव्यवस्थित और नियमित जीवन था । यशपाल निर्भिक और स्वाभिमानी इतने थे की, वे किसी के सामने बिना वजूद सिर झुकाना अपना अपमान समझते थे ।

राजनीतिक विचारों की तरह यशपाल के ` सामाजिक विचार ` भी कम महत्वपूर्ण नहीं है । यशपाल के सिर्फ उपन्यासों में ही नहीं अपितु समस्त साहित्य में भारतीय संस्कृति के प्रति एक विद्रोह का भाव व्यक्त है ।

विवाह --

यशपाल के विवाह की कथा भी अपने आप में ऐतिहासिक महत्व रखती है । सन १९३२ के फरवरी में इलाहाबाद स्थित ह्विट रोडके मकानपर छापा डालकर महिला सावित्रीदेवी के यहाँ टिके यशपाल को पुलिस ने अप्रत्यक्षित रूपसे गिरफतार किया । पुलिस दल पर गोळी चलाना, बिना लायसेन्स हथियार रखना आदि आरोपोंपर उन्हें अदालत ने १४ साल की सजा सुनायी । अपने जेल जीवन में अपने अस्तित्व की झलक देकर बडे संघर्ष के उपरान्त लेखन-पठन की सुविधाएँ प्राप्त कर ली । अपने क्रांतिकारी जीवन में यशपाल का परिचय ` प्रकाशवती ` नामक क्रांतिकारी महिला के साथ हुआ । एक साथ काम करते-करते दोनोंके दिलोमें प्रेम की डोर बंध गयी । इसी कारण क्रांतिकारी दल में तूफान खडा हो गया । ` प्रकाशवती ` का पूरा परिवार पुरातनवादी विचार और रूढियोंको माननेवाला था । ` प्रकाशवती ` के विचार उसके परिवार से भिन्न होने के कारण ही वह क्रांतिकारियोंमें शरीक हो सकी थी । परिणामत: ` प्रकाशवती ` को घर छोडनेपर मजबूर होना पडा । ऐसे में यशपालजी के जेल जाने के कारण वे अकेली रह गयी, लेकिन वे अपनी निश्चय

पर अटल रही । जेल की मुलकात में यशपालजी ने उन्हें बहुत समझाने की कोशिश की - कि, जीवन की वास्तविकता को समझ लो, यह असंभव है की आप मुझसे विवाह करें और व्यंजनात्मक शैली से उन्हें प्रेमबंधन से मुक्त होने की सलाह दी, लेकिन वह बहुत ही साहसी महिला थी । यशपाल के प्रति निष्ठा और प्रेम पवित्र था । यशपालजी की इस सलाह से तो वे यशपालजी के प्रति और ही सजग हुयी और यशपालजी से विवाह करनेका उनका इरादा पक्का हुआ । बरेली के डिस्ट्रीक्ट मैजिस्ट्रेट की अदालत में दरख्वास्त दी कि वह कैदी यशपाल से शादी करेगी । मैजिस्ट्रेट इन्कार नहीं कर सके और ७ अगस्त, १९३६ में बरेली जेल में उनका विवाह संपन्न हुआ । जेल के इतिहास में यह पहला प्रसंग था । इस के पहले जेल मे विवाह के बारेमें कोई प्रस्तुत कानून ना होने की वजह से इस विवाह को अनुमती दे दी गयी थी । इस शादी की सूचना पाकर जेल में एक अधिकारी मेजर मल्होत्रा बडे भावुक हुये और उन्होंने यशपाल से कहा " इस लडकीका त्याग देखो । त्याग की ऐसी भावना हिंदू नारी के अतिरिक्त संसार में कहीं संभव नहीं है । मैं मानता हूँ कि तुम भी असाधारण देशभक्त और वीर आदमी हो । तुमने अपना जीवन देश के लिए बलिदान किया है ।..... पर मैं सोचता हूँ इस लडकी को तुमसे शादी करने से मिलेगा क्या ? उसका तो यह असाधारण त्याग आदर्श है ।"[१] ' प्रकाशवती ' की माँ और यशपाल की माँ दोनों शादी की गवाह होगी । सभी वृत्तपत्रों और पत्रिकाओंमें इस शादी को अजीब शोहरत मिली । परिणाम यह हुआ की, इस विवाह के पश्चात जेल के मैन्युअल में एक धारा और बना दी गयी कि, भविष्य में किसी कैदी की शादी नहीं की जा सकेगी ।

रिहाई --

जेल का वातावरण यशपालजी के स्वास्थ के अनुरुप नहीं था । इधर

---

१ यशपाल सिंहावलोकन भाग-१ - पृ.१६० ।

उनकी पत्नी ने उनकी रिहाई का बंदोबस्त कानूनी तौरपर किया था । उस समय कॉंग्रेस में कुछ बल आ गया था इसीलिए उनके रिहाई का हुक्म पास किया गया । " रफी अहमद किदवई के विशेष प्रयास से यशपाल २ मार्च, १९३८ को जेल से रिहा हुए ।"[१]

रिहाई के बाद यशपाल ने सशस्त्र क्रांतिकारी का चोला फैंक दिया और साहित्यिक का चोला पहन लिया । अपने हाथ से पिस्तोल को फैंक दिया और कलम,को थामकर साहित्य क्षेत्र के मैदान में उतर पडे । जेल से रिहा होनेपर यशपाल से किसी पत्रकार ने प्रश्न किया," बदलती हुई परिस्थितियों में क्या लक्ष्य और क्या व्यवहार होगा ? यशपाल ने तुरंत जवाब दिया," जो काम पहले बुलेट" (शस्त्र) से करने का इरादा था, उसे अब" बुलेटिन " (साहित्य) से करूँगा ।"[२]

यशपाल को अनेक मुसीबतों का सामना करना पडा लेकिन हालात और मुसीबतोंसे झूझते और लडते हुअे भी यशपाल की कलम ना रूक सकी । जो कुछ गुजारेसे,बचता था उसे पुस्तक प्रकाशन में खर्च कर देते, इतना होनेपर भी उसके कदम ना डगमगाये ।

यशपाल की साहित्य साधना (कृतित्व) --

यशपाल में साहित्य-सृजन की प्रतिभा जन्मजात ही थी । यशपाल जब पाँचवी या छटी कक्षा में गुरूकुल कॉंगडी के विद्यार्थी थे । तभी उन्होंने ` अँगूठी ` नामक कहानी लिखकर अपनी साहित्य साधना का श्रीगणेश किया, उसी वक्त, यशपालजी को इस बातका भरोसा हो गया की, वे कहानियाँ लिख सकते है ।

---

१ डॉ.सुनीलकुमार लवटे - यशपाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व - पृ.३५ ।

२ वही पृ.३५ ।

नॅशनल कालिज लाहोर में स्व.उदयशंकर भट्टजी ने उनकी इस सृजनशीलता को पहचाना और उन्हें लिखने के लिए प्रोत्साहित किया । लेखन यशपालजी के लिए जीवन का पर्याय था, किसी तरह का शौक या मजबूरी नहीं ।

अपने जीवन के पचास साल की लम्बी अवधि में यशपाल ने उपन्यास,कहानी, नाटक आत्मकथा,निबंध,यात्रा-विवरण,पत्र-पत्रिकाएँ आदि साहित्य की विविध विधाओं पर अपनी लेखनी चलायी जो आज भी अप्रतिमता की प्रतिक है ।

यशपाल के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू --

१) क्रांतिकारी यशपाल --

बचपन से ही यशपाल के जीवन में ऐसे अनेक अजीबों - गरीब प्रसंग आये थे, जिनके कारण उनके मन में अंग्रेज शासन के विरुध्द घृणा और प्रतिहिंसा की भावना जाग उठी । यशपाल ने कांग्रेस के आंदोलन की विफलता को अपनी आँखोंसे देखा था । सामाजिक रूढीयों,परंपराओं से तो वे हमेशा बेचैन हो जाते थे इसीलिए सामुहिक सशस्त्र क्रांतिद्वारा अपने देशसे विदेशी सत्ता को जड से उखाड फेकने के लिए और मनुष्य द्वारा ही किया जानेवाला मनुष्य शोषण का अंत करने के लिए यशपाल क्रांतिकारी संगठन में हमेशा कार्यरत रहे । अनेक रूकावटें आने पर भी बुलेट से हो या बुलेटिन से हो, यशपाल अपने क्रांतिकारी मार्ग में अटळ रहे । यही है उनका क्रांतिकारी आत्मसम्मान । उनके पुराने,क्रांतिकारी साथियों ने उसे एक हादसा समझाकर छोड दिया लेकिन यशपाल ने अपने इस अभिमान,कृतित्व को साहित्य के रूप में सजोकर सँवारकर रखा ।

२) साहित्यकार यशपाल --

यशपाल में साहित्यिक के गुण जन्मजात थे । कभी उन्होंने कलम से तो कभी तलवार के सहारे साहित्य की मौलिकता को बढाया । इस बात में कोई शक नही की यशपाल प्रथम साहित्यकार थे, बाद में क्रांतिकारी थे । बचपन से ही उन्हें

लेखन ,पठन, मनन में रूचि थी । उनकी इस बातका गवाह हमें सिंहावलोकन में मिलता है । १९३९ से १९७६ तक अपने साहित्य की हर विधा में बहुमोल और सक्रिय भाग लिया है । साहित्य में उन्हें जहाँ कहीं भी मौका मिला उन्होंने ' मनुष्य व्दारा मनुष्य ' के शोषण का प्रखर विरोध किया । यशपाल का साहित्यिक व्यक्तित्व हमेशा जनसाधारण का प्रतिनिधित्व करता रहा । पैसों के लालच में अपनी लेखनी को बेचना या तोलना उन्हें कभी गवाँरा नहीं हुआ । " होनहार बिखान के होत चीकने पात "[१] यशपाल में साहित्यिक प्रतिभा जन्मजात थी ।

३) उपन्यासकार यशपाल —

सन १९४१ से लेकर १९७४ तक के तैंतीस वर्षो के काल में यशपाल ने ग्यारह उपन्यासों का सृजन किया । इसमें उन्होंने राजनैतिक,सामाजिक,प्रेम विवाद और नारी जीवन तथा ऐतिहासिक विषयोंपर अपनी लेखनी चलायी । दादा कॉमरेड, पार्टी कॉमरेड,देशद्रोही,मनुष्य के रूप,झूठा-सच,मेरी तेरी उसकी बात आदि सभी उपन्यासोंमें सामाजिक परंपरा,रूढी,जातीयता,विषमता,अंधश्रध्दा, धार्मिकता,नारी की दयनीय अवस्था,नारी जीवन, प्रेमसंबंध,विवाह आदि बातोंका चित्रण था । उपन्यास के क्षेत्र में असीम यश संपादन किया । आपने मौलिक, अनुदित,आत्मकथात्मक आदि अनेक तरह के उपन्यास लिखकर साहित्य के कलश को सजाया है ।

४) नाटककार यशपाल —

साहित्य क्षेत्र में नाटककार के रूपमें भी हम यशपाल का परिचय पाते हैं ।

---

१ डॉ.सरोज गुप्त - यशपाल : व्यक्तित्व और कृतित्व - पृ.५० ।

यशपाल ने १९५२ में 'नशे नशे की बात' नाटक लिखकर अपने नाटककार होने का भी उत्तम प्रमाण दिया । अपने इसी एकमेव नाटक से एक उत्तम नाटककार होनेका सबूत दिया है ।

५) निबंधकार यशपाल --

उनके निबंध सामाजिक तथा राजनीतिक यथार्थ से भरे हैं । कहानी की तुलना में निबंधों की संख्या सीमित है लेकिन निबंध में उनकी सोच गहरी है ।

६) कहानीकार यशपाल --

उनकी कहानियों में सामाजिक यथार्थ का दर्शन होता है । किसी एक विषय को उत्तम प्रकारसे परिप्रेक्षित करनेवाले कहानीकारों में यशपाल का नाम अन्यतम हैं । आमतौर पर उनकी कहानियोंमें नारी के प्रति आस्था,आदर ,नारी का समाज की नजरोंमें स्थान,नारी की दयनीय अवस्था आदि को व्यक्त करनेके लिए कहानी का माध्यम अपनाया । ' दु:ख एक दृष्टि ' यशपाल की हृदयस्पर्शी कहानी है । इस कहानी के माध्यम से यशपाल ने एक और बड़े सत्य की तरफ संकेत किया हैं । सुख आदमी को स्वार्थी शकी और आत्मकेंन्द्रित बनता है । इस कहानी में मनुष्य के बारे में भी बड़ा मार्मिक वर्णन किया है । मनुष्य-मनुष्य में कितना भेद होता है परंतु मनुष्यत्व एक ऐसी चीज है जो कभी कभी भेद की सब दीवारों को लाँघ जाती है ।

यह सच है कि यशपाल की तुलना हर किसीसे की जा सकती है क्योंकि वे एक सफल नाटककार ही नही कुशल अभिनेता भी थे । यशपाल के साहित्य में अहिंसा का लक्ष्य भी भौतिक ही है ।

यशपाल का साहित्य' सामाजिक यथार्थवाद ' के अंतर्गत आता है ।

" यशपाल के वर्तमान व्यक्तित्व का निर्माण सम्भवत: जेल से मुक्ति के उपरान्त तीस वर्षों के लम्बे समय में हुआ है । उनके इस व्यक्तित्व को भी उनके

साहित्यिक व्यक्तित्व से पृथक नहीं किया जा सकता ।[१] किसी भी साहित्यकार का साहित्यिक व्यक्तित्व उसके इतर व्यक्तित्व से परस्पर सम्बन्ध होता है ।

७) चित्रकार यशपाल --

यशपाल मनुष्य जीवन के सफल चित्रकार है । जीवन के घात-प्रतिघातों से जूझते हुए उन्होंने समाज के व्यापक धरातल को अतिशय बारीकी से देखा, परखा है । इस प्रयास में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, धरातल पर नारी को देखने की चेष्टा की ।

" यशपाल नारी जीवन के सूक्ष्म पारखी है । नारी के भाव-विश्व से भी आप अच्छी तरह वाकिब है । अत: आप नारी को मनुष्य जीवन में सबसे महत्वपूर्ण स्थान देते है ।"[२] चित्र और शिल्प में उनकी रूचि विशेष परिष्कृत थी ।

यशपाल का अनुभव-क्षेत्र कितना विस्तृत है, विभिन्न जीवन परिस्थितियों के चित्रण की उसमें कितनी क्षमता है । यशपाल का कृतित्व जानने का बाद इस बातका पता चलता है ।

यशपाल प्राचीन आदर्शवाद विचारधारा में विश्वास नहीं रखते, वे घोर यथार्थवादी है । जीवन का वह यथार्थ जिसमें मनुष्य का उसके सामाजिक परिपार्श्व के बीच चित्रण किया जाता है ।

८) मार्क्सवाद --

मार्क्सवाद जब साहित्य के क्षेत्र में आता है, तो वह प्रगतिवाद कहलाता है और वह कला के क्षेत्र में उपयोगिता और जीवन के क्षेत्र में यथार्थ बनकर चलता

---

१ डॉ. सरोज गुप्त - यशपाल : व्यक्तित्व और कृतित्व - पृ.१७ ।

२ प्रा. ए. एल. शेन्डे - यशपाल की कहानियों में नारी - पृ.२ ।

है ।" यशपाल की जीवनदृष्टि मूलत: मार्क्सवादी दर्शन से अनुप्राणित है । मार्क्सवाद समाज में समता (कम्युनिज्म) लाने की एक विधा अथवा विचारधारा है । यशपाल ने इससे अपना घनिष्ठ सम्बन्ध स्वीकार किया है, " मैं कम्युनिज्म को सर्वसाधारण जनता की मुक्ति का साधन वैज्ञानिक विचारधारा समझता हूँ । अपनी सम्पूर्ण शक्ति को उस वाद के प्रति देय स्वीकार करने में मुझे कोई संकोच नहीं है ।"[१]

समाज में शासन के अनेक रूप समय और हालात की वजह से दिखलाई देते हैं । मार्क्सवाद के विचार में शासन का रूप और प्रकार समाज के जीवन के ढंग, उसमें मौजुदा परिस्थिति, आर्थिक सम्बन्धो के आधारपर निश्चित होती है । मार्क्स के अनुसार आर्थिक इतिहास बताता है कि, आरम्भ से ही " राजसत्ता उस वर्ग के हाथ में रहती है जो सबसे अधिन शक्तिशाली है और जो आर्थिक दृष्टि से समाज का शासन करता है । वही वर्ग अपने साधनों के कारण राजनीतिक दृष्टि से भी शासक बन जाता है और पीडित श्रेणी को दबाये रखने और उसका शोषण करने के नये साधन प्राप्त कर लेता है ।"[२] यशपाल देश, काल और परिस्थितियों के अनुसार मार्क्सवाद में पूनर्विचार या संशोधन को अनिवार्य मानते है ।

१) <u>सिंहावलोकन और यशपाल</u> --

" सिंहावलोकन आत्मकथा या आपबीती नहीं है । यह संस्मरणों का लेखाजोखा है, जिसके व्दारा लेखक ने हिंदुस्थानी समाजवादी प्रजातन्त्र सेना का आद्योपान्त इतिहास ही प्रस्तुत किया है ।"

---

१ डॉ. सरोज गुप्त - यशपाल : व्यक्तित्व और कृतित्व - पृ.४६ ।

२ डॉ. सरोज गुप्त - वही पृ.५० ।

गाँधीवादी नीति के प्रति अन्य क्रांतिकारियों की भाँति यशपाल की भी आस्था नहीं थी । सिंहावलोकन भाग-१ में वे स्पष्ट कहते हैं," गाँधीवादी काँग्रेसी आन्दोलन में अविश्वास ही क्रांतिकरियों को सशस्त्र क्रान्ति की चेष्ठा की ओर ले जा रहा था .... ।" [१]

विदेश यात्राएँ --

अपनी तिहत्तर वर्ष की दीर्घ जिन्दगी में यशपालजी ने सात बार विदेश भ्रमण किया । यह बात यशपालजी के जीवनकाल को गौरव प्रतिभा दिलाने में योगदान है । उन्होंने विदेश भ्रमण एक पर्यटक की हैसियत से नहीं बल्कि भारत जैसे विशालकाय देश के लेखक के प्रति-निधी के रूप में की है ।

उपाधियाँ तथा सम्मान --

किसी साहित्यिक की सफलता का यह गौरव पूर्ण प्रमाण रहता है कि, उसे पुरस्कार और उपाधियोंसे अलंकृत किया जाय । उसे अनेक साहित्यिक संस्थानोंसे सम्मानित किया जाय । यशपाल की तुलना ऐसे साहित्यिकों में करना गौरवपूर्ण है क्योंकि साहित्य के क्षेत्र में उन्हें असंख्य देशी-विदेशी पुरस्कारों और उपाधियोंसे सम्मानित किया गया था ।

यशपाल बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार है । उनके साहित्यिक कृतित्व के अंतर्गत उपन्यास,कहानियाँ,यात्रावर्णन,नाटक,साहित्यिक एवं राजनीतिक निबंध तो आते ही है । उन्होंने देश की मुक्ति के लिए सशस्त्र क्रांति के आंदोलन की कहानी भी 'सिंहावलोकन' नाम से आप-बीती रूप में लिखी है । इस प्रकार उनका कृतित्व महान् है । अभिनन्दन ग्रन्थ के व्दारा तो वह सम्मानित किये ही गये है । उनकी अनेक रचनाओं का देशी तथा विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है ।

---

१ सिंहावलोकन - भाग-१ - पृ.१२-१३ ।

" उन्होंने कृतियों में आदर्श की ज्योत्स्ना नहीं, क्रांति की मशाल जलायी है।"[१]

उम्र के मोड के साथ-साथ यशपालजी के आचार-विचार, रुचि एवं अभ्यास में भी एक विशेष मोड आ गया था। " उनके विचार में व्यक्ति की संतुष्टि ही मानव के अभ्यास की जननी है।"[२]

बीमारी से सामना --

यशपाल की अदम्य और बोधगम्य कार्यक्षमता को चोट पहुँचानेवाली उनकी निरंतर रुग्णता।

संग्रहणी जैसे बिकट रोग से ७ वर्ष की अवस्था में ग्रस्त होने का अर्थ है, मृत्यु शय्या पर लेटना। परन्तु विधि को इससे भी संतोष न हुआ, यौवनावस्ता में क्षय के रोग से पीडित और वृध्दावस्था में प्रोस्ट्रेट ग्लेण्ड्स। इन सभी रोगोंने उनके स्वास्थ को झकझोड दिया, लेकिन यशपाल जैसे सहासी और निर्भिक व्यक्तिने इस तूफान में अपनी जीवन नौका को एक सफल और कुशल, नाविक के भाँति अपनी अर्धांगिनी ' प्रकाशवती' के सतीत्व और प्रेम के आधारपर किनारे में लाने में सफल रहे। प्रेम में बहुत शक्ति होती है। मुसीबतों का सामना हँस के करने में यशपाल को इसी बात का सहयोग मिला।

" यशपाल के जीवन की इस डगमगाती नौका को कण्ठ-रोग एवं मोतिया -बिन्दू नामक के रोग ने भी भयंकर रूप से झकझोरा परन्तु इनका अदम्य साहस एवं इनकी पत्नी का सतीत्व सम्भवत: सदा ही यम को आप से दूर खदेडता रहा।"[३]

महा-निर्वाण --

क्रांतिकार्य जैसे कठिण पथपर चलते-चलते उनकी सेहत अनेकों रोगों का

---

१ डॉ.शान्तिस्वरुप गुप्त - यशपाल और उनकी दिव्या - पृ.७।
२ डॉ.सरोज गुप्त - यशपाल व्यक्तित्व और कृतित्व - पृ.२५।
३ वही पृ.२६।

शिकार हो चुकी थी । रोग से पिडीत इस महान आत्मा के शरीर ने उनका साथ २६ दिसंबर १९७६ को छोड दिया । कितनी मुसीबतों के बावजूद भी यशपाल अंतिम क्षण तक अपने निश्चय पर दृढ रहे । यशपाल के अनेकों रूपों के कारण वे सभी के पूजनीय रहे ।

हिन्दी साहित्य यशपाल जैसे महान आत्मा का सदैव ऋणी रहेगा, जिन्होंने सामाजिक,राजनीतिक,धार्मिक,आर्थिक समस्याओं को तर्क संगत रूप से हल करने की नयी दृष्टि प्रशस्त की है ।

निष्कर्ष

यशपाल के जीवन वृत्त को पढने और परखने के बाद इस बातका पता चलता है कि, यशपाल के जीवन का मूल उद्देश्य ही क्रांति था । वे क्रांतिकार पहले थे, लेखक बाद में । यशपाल की साम्यवादी रचनाओं का मूलाधार मार्क्सवादी दर्शन है । यशपाल प्रगतिवादी लेखक है अर्थात जीवन-दर्शन के निर्माण में मार्क्सवादी दर्शन का प्रबल हाथ है । यशपाल के कृतित्व और व्यक्तित्व ने भारतीय समाज को अपने अनमोल विचारोंसे प्रेरित किया है । भारतीय समाजको अन्याय,अत्याचार,मनुष्य से ही मनुष्य का शोषण इन बातोंसे मुक्ति दिलाने में यशपाल का योगदान महत्वपूर्ण है । हिन्दी साहित्य के इतिहास में वे सदाही अमर रहेंगे ।

यशपाल का व्यक्तित्व और कृतित्व जानने के बाद, हम इस नतिजेपर पहुँचते है कि, यशपाल अपने युग के यथार्थवादी और क्रांतिकारी उपन्यासकार थे । समाज में प्रचलित विवाह,प्रेम,सेक्स जैसी धारणाओं की जगह नये विचार प्रस्तुत कर समाज को नये जमाने के साथ कदम मिलाकर चलने की क्षमता प्रदान की है ।

यशपाल ने अपने साहित्य में सामाजिक,आर्थिक,राजनीतिक,धार्मिक समस्याओं को तर्क संगत रूपसे हल करने का नया मार्ग प्रस्तुत किया है । यशपाल बहुपठित है । अध्ययन,चिन्तन,लेखन उनका मुख्य व्यसन है । यशपाल अपने युग के उपन्यासकार,नाटककार,क्रांतिकार,निबंधकार,कहानीकार थे । उन्होंने अपने साहित्य व्दारा समाज को सजग और जागृत रहने की प्रेरणा दी है । वे अपने साहित्य के जरिए अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सदा अमर रहेंगे ।

यशपाल ने एक ओर पूँजीवादी व्यवस्था की कटु आलोचना की है, तो दूसरी ओर उत्पीडित वर्ग,की क्रांति के लिए आवाहन किया है । वे मानते हैं कि

प्रत्येक व्यक्ति को अपने परिश्रम का फल पाने का समान अवसर होना चाहिए, उसे समाज के शासन और व्यवस्था में भाग लेकर आत्मनिर्णय का भी समान अधिकार हो ।

उन्होंने आजीवन शोषण के विरोध में अपनी आवाज उठायी । विरोध करते समय उन्होंने विरोधी की शक्ति, पद एवं मर्यादा का विचार करके उससे भयभीत होने के बदले असीम साहस का परिचय दिया ।

यशपाल का अनुभव क्षेत्र कितना विस्तृत है, विभिन्न, जीवन परिस्थितियों के चित्रण की उसमें कितनी क्षमता है । यशपाल का कृतित्व जानने के बाद इस बातका अंदाजा आता है ।